December 2015

TODAY

(NEWSLETTER OF EURASIA REIYUKAI)

Year : 3, Vol. 30

www.eurasiareiyukai.com

Smile of The Month

१८ नवम्बर २०१५ को सम्पन्न महागुरु काकुतारो कुबोजी के प्रति कृतज्ञता पर्व पर संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा प्रदान किये गये मार्ग निर्देशन के प्रमुख अंश

" सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड का एक ही प्रकाश "

नेपाली जनता का जीवन आज अत्यन्त कष्टप्रद है । तेल नहीं है, जिसके फलस्वरूप मोटर बाइक, वाहन, सार्वजनिक बस आदि उतने नहीं चल रहे हैं। इस कारण यहां मुख्य समारोह में उतने लोग शामिल नहीं हो सके। इसलिए वह लोग आज अपनी-अपनी मिहाता शाखाओं में कृतज्ञता पर्व मनाने का मौका प्राप्त कर रहे हैं । श्रीमान् काकुतारो कुबोजी जापानी थे। आपलोगों की तरह ही कर्म का सम्बन्ध होने के कारण उस देश में जन्म लिए, मैं भी वही जन्म लिया हूँ । कर्म के सम्बन्ध के कारण उस देश में जन्म लेने का मौका प्राप्त किया हूँ । लेकिन हम श्रीमान् काकुतारो कुबोजी को महागुरू कुबोजी कहा करते हैं । वह कुबो परिवार में धर्मपुत्र बने थे, उनके बडे भाई कोतान परिवार में धर्मपुत्र बने थे । उन दोनों भाईयों ने काफी कष्टप्रद अभ्यास किया था । बडे भाई का नाम यासुकिचि कोतानी है एवं उनकी श्रीमती किमी कोतानी जी सहित तीन लोगों ने इस पृथ्वी पर के मानव समाज एवं आंखों से दिखाई नहीं पडने वाले संसार को कैसे बचा सकते हैं, यदि नहीं बचाया तो पृथ्वी का विनाश हो जाएगा, ऐसा सोचकर गहराई से अभ्यास किया और सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र में बुस्सोगोनेन की शिक्षा का पता लगाया । उसी के फलस्वरूप हम महान् रेयूकाई शिक्षा का अभ्यास करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं।

मैंने अपने माता-पिता को अनुरोध कर जन्म नहीं लिया है, आपलोग भी ऐसे ही होंगे । कृपया मुझे जन्म दें, ऐसा कहकर तो नहीं आये हैं ? अपने में सभी तरह की बातें एक जैसे मिलने वाले कोई दो भाई या दो बहन शायद किसी की नहीं होंगी । वह सभी कर्म के सम्बन्ध से जन्म लेकर आए हैं । वह अभिभावकों द्वारा जन्म नहीं लेकर बल्कि कर्म के सम्बन्ध के कारण जन्म ले कर आए हैं । मैं बदमाश होने के कारण सोचा करता था कि माता-पिता क्यों घर के कार्यों को महत्व नहीं देकर मिचिबिकी में जाया करते हैं । पिता जी से मैंने पूछा कि क्यों मैं ऐसे घर में जन्म लिया हूँ ? फलाना के घर में जन्म ले ने से अच्छा होता तो उन्होंने जवाब में मुझसे कहा कि वह कर्म के सम्बन्ध के कारण नहीं हुआ । कर्म का सम्बन्ध रहने के कारण तुम इस घर में जन्म लिए हो, ऐसा कहा, लेकिन मुझे कुछ समझ में नहीं आया । क्यों ऐसा कर्म का सम्बन्ध हुआ, यह बात रेयूकाई शिक्षा में लगने के बाद तथा युवा के रूप में क्रियान्वयन करने के बाद ही पूरी तरह समझने लगा।

जो भी हो, अपनी खुशी से इस संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेकर नहीं आते हैं, आपलोगों का जो अपना-अपना चरित्र और व्यवहार होता है, उसी प्रकार का स्वभाव होता है। उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात लेकर जन्म लिए हैं, वह है जिम्मेवारी और कर्तव्य । जिम्मेवारी और कर्तव्य लेकर जन्म लिए हैं । इस संसार को नहीं बचाने से नहीं होने की जिम्मेवारी और कर्तव्य सभी अपने साथ लेकर जन्म लिए हैं ।

दृढतापूर्वक आत्मविश्वास नहीं लेने से नहीं होगा । मैं क्यो मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आया हूँ ? उसका पता लगाने का मौका प्राप्त करें । इस आंखों से दिखाई पडने वाले एवं नहीं दिखाई पडने वाले संसार को मुझे बचाना है, मैं बचा चुका हूँ नहीं, मैं बचाऊंगा, कहकर कर सकने वाले व्यक्ति आपलोग हैं । इस रेयूकाई शिक्षा के तीन स्तम्भों का स्वयं कार्यान्वयन कर सदस्यों से भी कार्यान्वयन नहीं कराने से नहीं होगा, उसे बोधिसत्व कहते हैं। आपलोग वह जिम्मेवारी और कर्तव्य लेकर इस संसार में जन्म लिए हैं।

औरों की बुराई न कर, उनकी प्रशंसा करना ही अपनी आत्मा को चमकाने की बात होती जाती है । उसका आधार कृतज्ञता है, दूसरे व्यक्ति का अस्तित्व रहने के कारण ही अपना अस्तित्व होता है । इस प्रकार रेयूकाई शिक्षा का आधार कृतज्ञता है, पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ होना है, परिवार के प्रति भी कृतज्ञ होना है, पडोसियों एवं कार्यालय में सबके प्रति कृतज्ञ होना है । कृतज्ञता की भावना लेकर यदि मुस्कानपूर्वक कहा तो अगले के मन का दरवाजा खुल जाता है । रेयूकाई शिक्षा का एक आधार यह भी है, उसे आज और अभी से ही शुरू करना पडेगा । वही बात अन्तरआत्मा का विकास है । आज का स्वयं बने, कल का स्वयं नहीं, आज का स्वयं बनकर, आने वाले अपने जीवन को परिवर्त्तित करते जाएं।

सभी लोग अपनी जिम्मेवारी और कर्तव्य महसूस करने का मौका पाकर इस संसार को बचा सकने वाले बोधिसत्व के कार्य को कार्यान्वयन करेंगे, इस बात के साथ आपलोगों के काम, आपलोगों के परिवार में उन्नति हो, इन बातों की कामना करता हूँ ।

अन्त में बेवजह अफवाह न फैलाते हुए, वास्तव में किसने, कब कितनी तारीख, कितने बजे, मुझे कहाँ बताया, ऐसा सोचकर नहीं कहने पर खुद के द्वारा बनायी गयी झूठी बात समझी जाएगी ।

खुशी का अनुभव

नाम : जुन होजाशु श्रीमती पारो राई
क्षेत्र : विन्दु, भारत १८वां समूह
नमस्कार

मै रेयूकाई का नाम बचपन से ही सुनी थी, लेकिन अक्टूबर २०११ में जाकर ओया जी से मुलाकात होने पर सदस्य बनने का मौका प्राप्त की थी । अभ्यास के क्रम में ओया जी ने घर में सोकाइम्यो की स्थापना कर दी और कहा कि अब से इसी सोकाइम्यो को केन्द्रविन्दु बनाकर जीवन का वास्तविक अभ्यास शुरू करना होगा । घर में सोकाइम्यो का स्वागत कर पूर्वजों को सूत्रपाठ चढाकर शिक्षा को धीरे-धीरे अभ्यास करते जाने पर मुझ में सीखने की भावना, कृतज्ञता की भावना और क्षमा की भावना विकसित होते जाने की बात महसूस हुई । घर में माता-पिता, श्रीमान् और बहनों ने भी इस बात को महसूस कर रहे थे। मेरे में कोई कमी-कमजोरी नहीं है ऐसी बात सोचने वाले व्यक्ति हो ने पर भी आध्यात्मिक संसार में विश्वास बढते जाने पर सभी यथार्थ बातों का पता लगता जाता है, यह बात मैंने महान् रेयूकाई शिक्षा के अभ्यास से सीखने का मौका पायी । सर्वप्रथम गोहोजा में स्वयं कर सकने वाली बातों के प्रति क्षमा मांगकर, अब से ज्यादा से ज्यादा मिचिबिकी कर सकूं ऐसी कामना चढाकर मिचिबिकी अभ्यास में निकलने लगी । इस प्रकार स्वयं बागान मैं काम करने जाने के क्रम में कम से कम एक जन की मिचिबिकी करूंगी, ऐसी प्रतिज्ञा लेकर मिचिबिकी करते जाने का मौका प्राप्त कर रही हूँ। मिचिबिकी मिलन का आयोजन कर उस मिलन से सात जन सदस्यों के सोकाइम्यो हे तु आवेदन करने पर सभी के घर में सोकाइम्यो स्थापना कर सदस्यों के साथ-साथ सूत्रपाठ चढाने का मौका प्राप्त कर उनके साथ-साथ अपनी भी परवरिश होते जाने का मौका प्राप्त कर रही हूँ । मिलनों का आयोजन महत्वपूर्ण है, इस बात का मार्गनिर्देशन शिबुचो एवं ओ या से प्राप्त कर घर-घर में जाकर १०-२० जनों का समूह गठन कर मिलियन अभियानका कार्यान्वयन करने का मौका प्राप्त कर रही हूँ । इतनी महान शिक्षा में अभ्यास करने का मौका प्रदान कर देने के लिए संस्थापक अध्यक्ष जी के प्रति कृतज्ञता अर्पण करती हूँ और स्वयं होजाशु बनकर अपने सदस्यों का सोकाइम्यो स्वयं लिखने का मौका पाकर अभ्यास करने का मौका पाकर, यूराशिया रेयूकाई की दिव्य ज्योतिर्मय सदस्य हूँ-ऐसा गौरव लेकर अभ्यास करते जाने का मौका प्राप्त करते रहने की प्रतिज्ञा करती हूँ।

यूराशिया रेयूकाई प्राकृतिक वातावरण संरक्षण समिति की अपील

संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा सिखाये जाने के अनुरूप किसी भी बात का अपने द्वारा क्रियान्वयन कर उसे अन्य लोगों से भी कार्यान्वयन करना पडता है। इसलिए प्राकृतिक वातावरण को संरक्षण करने के संदर्भ में भी निर्धारित अनुसूचि के अनुसार मुद्दों पर जनचेतना जगाने के लिए स्वयं कार्यान्वयन कर सदस्यों को भी कार्यान्वयन कराकर हमें अपनी रहने वाली पृथ्वी को अपना समझते हुए पृथ्वी के वातावरण का संरक्षण करने के लिए अग्रसर होना पडेगा, इस बात को अंतर्हृदय से मनन करते हुए अपने घर से ही प्रारंभ करें और कराएं।

ज्ञ।१) अपने घर और घर के आसपास स्वयं साफ करें ताकि घर, टोला, समाज, गांव और देश साफ-सुथरा रह सके।

२) यथासंभव गंदा न करें, तैयार हुई गंदगी र कचरों का वर्गीकरण कर उसका उचित व्यवस्थापन करें।

३) लडके लडकियों में समय पर गंदगी के सम्बन्ध में जनचेतना जगाएं, जैसे कागज के टुकडे, संतरा के छिलके, चाकलेट के प्लास्टिक सामान आदि का उचित व्यवस्थापन करने की बात सिखाएं ।

४) शीघ्र सड-गल जाने वाले एवं शीघ्र नष्ट न होने वाले कचरों का वर्गीकरण कर शीघ्र सडने-गलने वाली सामाग्रियों का जैविक खाद बनाकर प्रयोग करें तथा रासायनिक खाद का प्रयोग न कर पर्यावरण को नकारात्मक असर से बचाएं ।

५) बिजली के उपकरणों का अनावश्यक प्रयोग न करें । प्रयोग के बाद बिजली को पूरी तरह बंद कर दें तथा कार्बन डाइआक्साइड का उत्पादन घटाएं।

६) घर में कम्प्यूटर और टेलिविजन प्रयोग करने के पश्चात् उनका पूरी तरह स्विच आफ करें और अपने बच्चों में भी उसकी आदत डलवायें ।

७) अपने घर एवं घर के आसपास उपयुक्त जगह पर पौधारोपण कर आक्सीजन की मात्रा बढाकर वातावरण को स्वच्छ बनाएं ।

८) प्लास्टिक के शापिंग बैग के बदले घर से ले गये कपडे के थैले का उपयोग करें और अनावश्यक खर्च का बोझ कम करें तथा प्राकृतिक वातावरण को स्वच्छ रखें।

नागरिक साफ-सफाई अभियान अन्तर्गत बागमती नदी की सफाई

नागरिक साफ-सफाई अभियान अन्तर्गत धनगढी बाजार की सफाई

यूराशिया रेयूकाई टुडे पत्रिका विगत तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित करने का मौका प्राप्त कर रहे हैं । आगे भी निरंतर प्रकाशित करने का मौका प्राप्त करेंगे । टुडे पत्रिका के प्रति आपलोगों के व्यक्तिगत अनुभव, सुझाव, कोई राय-सल्लाह रहने पर यूराशिया रेयूकाई में उसकी लिखित जानकारी भेजने का हार्दिक अनुरोध करते हैं ।